पाठ 13

जंगल

(प्रस्तुत कहानी मंे लेखक ने बच्चों में जीव-जन्तुओं के प्रति संवेदना का सजीव वर्णन किया है)

रीडर अणिमा जोशी के मोबाइल पर फोन था मांडवी दीदी की बहू तविषा का। आवाज उसकी घबराई हुई-सी थी। कह रही थी, "आंटी बहुत जरूरी काम है। अम्मा से बात करवा दें।" अणिमा दीदी ने असमर्थता जताई-मांडवी दीदी कक्षा ले रही हैं। काम बता दें। उनके कक्षा से बाहर आते ही वह संदेश उन्हे दे देंगी। बल्कि अपने सामने ही मांडवी दीदी से उसकी बात करवा देंगी। वैसे हुआ क्या है? तबिषा, इतनी घबराई हुई-सी क्यों है ? घर में सब कुशल -मंगल तो हैं ?

परेशानी का कारण बताने की बजाय तविषा ने उनसे पुनः आग्रह किया, "आंटी, अम्मा से बात हो जाए तो ....."

अणिमा जोशी को स्वयं उसे टालना बुरा लगा।

"उचित नहीं लगेगा, तविषा। अनुशासन भंग होगा। कक्षा का समय विद्यार्थियों के पढ़ने का समय है। मुझे बताओ, तविषा! मुझे बताने में झिझक कैसी।"

"नही आंटी, ऐसी बात नही हैं।" तविषा का स्वर भर्रा-सा आया।

तविषा ने बताया, ‘‘घर में जो जुड़वां खरगोश के बच्चे पाल रखे हैं उन्होंने, सोनू-मोनू, उनमें से सोनू नहीं रहा।’’

साढ़े दस के करीब कामवाली कमला घर में झाड़ू-पोंछा करने आई तो बैठक बुहारते हुए उसकी नजर सोफे के नीचे सो रहे सोनू पर पड़ी। जगाने के लिए उसने सोनू को हिलाया, ताकि सोफे के नीचे वह ठीक से सफाई कर सके। उसके जगाने की सोनू पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह बुदबुदाई- कैसे घोड़े बेचकर सो रहा है शैतान! अबकी उसने उसे लगभग झकझोरा, बल्कि उसकी टांग पकड़कर उसे सोफे के नीचे से बाहर घसीट लिया। सोनू-मोनू की चैकड़ियां, छुप्पा-छुप्पावल, साफ-सफाई के काम में कम नही खिझाती उसे। घर में कौन पियूष कम बिखराहट करता था, जो इनकी कमी थी। मगर सोनू की देह में कोई हरकत नही हुई। उसे लगा था, बाहर खीचते ही वह उसकी पकड़ से छूट एकदम से दौड़ लेगा। कमला ने चीखकर तविषा को पुकारा, ‘‘छोटी बीजीsss’’

तविषा अचेत सोनू को देख घबड़ा गई। उसने सोनू की पीठ-पेट को सहलाया-पुचकारा। उसने कान खींचकर छेड़ा। कान खींचना सोनू को बड़ा नागवार गुजरता था। अपनी रिस जाहिर करते हुए वह बड़ी देर तक उनसे दूर-दूर बना रहता था। पुचकारने पर भी गोदी में न आता था। मगर इस बार न सोनू ने अपनी रिस प्रकट की, न उससे दूर भागा। गोदी मंे उठाया तो उसकी रेशमी-सी देह हाथों में टूटी कोंपल-सी झूल गई ।

उसकी समझ में नही आ रहा था, वह क्या करें ? आस-पास जानवरों का कोई डॉक्टर है नहीं। बी. ब्लॉक की श्रेया ने अपने यहाँ कुत्ता पाल रखा है। इंटरकाम से उसने श्रेया से बात करनी चाही। संयोग से श्रेया घर पर नहीं है। नौकर को जानवरों के डॉक्टर के विषय में कोई जानकारी नहीं। वह नया ही उनके घर पर लगा है। अपनी समझ से उसने बच्चों के डॉक्टर को घर बुलाकर सोनू को दिखाया। डॉक्टर ने देखते ही कह दिया,‘‘प्राण नही अब सोनू में। हो सकता है, इसे किसी जहरीले कीड़े ने काट लिया हो। बिल्ली तो नहीं आती घर में ?

नीचे गार्डन में घुमाने तो नहीं ले गए ?"

"आंटी, आप अम्मा को जल्दी से जल्दी घर भेज दें। घंटे-भर में प्ले स्कूल से पियूष घर आ जाएगा। बहुत प्यार करता है वह सोनू-मोनू को। उसे समझाना-संभालना मुश्किल हो जाएगा। मोनू भी भौंचक-सा सोनू की निस्पंद पड़ी देह के इर्द-गिर्द मंडरा रहा है।"

मांडवी दी घर पहुंची तो बैठक में काली बदली ठिठकी-सी तनी हुई थी।

सोफों के बीच के खाली पड़े फर्श पर सोनू निचेष्ट पड़ा हुआ था। झुकीं तो पाया, आँख ठहरी हुई थी उसकी, मानो नींद में आँखे खुली रह गई हों। पियूष उसी के निकट गुमसुम बैठा हुआ था। मोनू-सोनू की परिक्रमा-सा करता कभी दाएं ठिठक उसे गौर से ताकने लगता, कभी बाएं से। कभी मुँह उठाकर पियूष की ओर देखता। उससे पूछने की मुद्रा में- भैया, ये सोनू उठकर हमारे साथ खेलता क्यों नहीं ? पियूष की स्तब्धता तोड़ना उन्हें- जरूरी लगा। नन्हीं-सी जिंदगी में वह मौत से पहली बार मिल रहा है। मौत उसकी समझ में नहीं आ रही है। ऐसा कभी हुआ नहीं कि उन्होंने घर की घंटी बजाई हो और तीनों लपककर दरवाजा खोलने न दौड़े हों। खोल तो पियूष ही पाता था, मगर मुँह दरवाजे की ओर उठाए वे दोनों भी पियूष के नन्हे हाथों में अपने अगले पंजे लगा देते हों जैसे।

पियूष का सिर उन्होंने अपनी छाती से लगा लिया। पियूष रोने लगा है-"दादी, दादी! ये सोनू को क्या हो गया ? दादी, सोनू बीमार है तो डॉक्टर को बुलाकर दिखाओ न ..... दादी! मम्मी गंदी है न! बोलती है-सोनू मर गया....."

वह अपनी उमड़ी चली आ रही आँखों को भीतर-ही-भीतर घुटकते हुए, रूंधे स्वर को साधती हुई उसे समझाने लगती हैं, "रोते नहीं, पियूष। सोनू को दुःख होगा। सोनू तुम्हें

हमेशा हँसते देखना चाहता था न! इसीलिए तो तुम्हारे साथ खूब धमाचैकड़ी मचाता था। उसके पीछे तुम नीचे जाकर अपने हमजोलियों के संग खेलना भी भूल जाते थे।''

मोनू उनकी गोदी में मुँह सटाए उनके चेहरे को देख रहा है, बिटर-बिटर दृष्टि, आँसुओं से भरी हुई। जानवर भी रोते हंै। पहली बार उन्होंने किसी जानवर को रोते हुए देखा है। बचपन में गांव की काली चित्तेवाली गाय याद है। गाय की आँखों की कीच-भर याद है। अम्मा बताती थी-'बछड़ा जब नहीं रहा था चितकबरी का, अजीब तरीके से रंभा-रंभाकर रोती थी। कलेजा मुँह को आ जाता था।''

अणिमा जोशी के मोबाइल से उन्होंने बेटे शैलेश को दफ्तर में खबर कर देना उचित समझा था। न जाने परेशान तविषा ने शैलेश को फोन किया हो, न किया हो। शैलेश ने कहा था, ''ऐसा करें, अम्मा, घर पहुँच रही हैं आप। नीचे सोसाइटी में चैकीदार को कह दें। ढाई-तीन से पहले जमादारों का काम निपटता नहीं। एक को ऊपर भेज दें और सोनू को उठवाकर समाचार अपार्टमेंट्स से लगे नाले में फिंकवा दें। कुŸो-बिल्ली सफाचट कर जाएंगे। गरमी में ज्यादा देर घर में रखने से बदबू आने लगेगी। पियूष वैसे भी बड़ी जल्दी बीमार पड़ जाता है। सावधानी बरतना जरूरी है, अम्मा।''

''और अम्मा, बेहतर है यह काम पियूष के प्ले स्कूल से लौटने के पहले ही हो जाये। उसके कोमल मन मस्तिष्क पर बुरा असर पड़ेगा। बहुत सवाल करता है पियूष। जवाब देते नहीं बन पड़ेगा।''

उन्होंने शैलेश से स्पष्ट कह दिया था-छुट्टी लेकर वह फौरन घर पहंुचे। उनके घर पहुँचने तक पियूष घर पहुँच चुका होगा। अपनी घड़ी पर निगाह डाल ले वह। नाले में वह सोनू को हरगिज नहीं फिंकवा सकती। पियूष सोनू को बहुत प्यार करता है। स्थिति से भागने की बजाय उसका सामना करना ही बेहतर है। सोनू को घर में न पाकर उसके अबोध मन के जिन सवालों से पूरे घर को टकराना होगा-उसे संभालना कठिन होगा। जमादार को घर पहुँचते ही वे खबर कर देंगी। उनकी इच्छा है, घर के बच्चे की तरह सोनू का अंतिम

संस्कार किया जाए। आस-पास ही कहीं जमादार से मिट्टी खुदवाकर उसे जमीन में गाड़ दिया जाए।

बेटे शैलेश को उनकी बात सुसंगत लगी हो या न लगी हो, पर उसे मालूम है कि अम्मा से बहस एक सीमा तक ही खिंच सकती है। तब तो और नहीं, जब वे किसी बात को लेकर निर्णय ले चुकी होती हैं।

''पहुँचता हँू।'' शैलेश ने कहा था।

उन्होंने पियूष को समझा दिया था-''तुम्हारे सोनू को जमीन में गाड़ने ले जा रहें हैं, तुम्हारे पापा। नन्हें बच्चों की मौत होती हैं तो उन्हें जमीन में गाड़ दिया जाता हैं, ताकि बच्चा कही और जन्म ले सके..... न न, जमीन से बच्चा पेड़ की भाँति नहीं उगता पगले। वहाँ से किसी मां के पेट में पहुँच जाता है। नौ महीने उस मां के पेट में रहता है और फिर दूसरे बच्चे के रूप में जन्म ले लेता है। तुम मोनू के पास ही रहो। तुम्हें मोनू को संभालना है। पापा के साथ जाने की जिद न करो।''

''मेरा जन्म भी ऐसे ही हुआ ?''

''शायद!''

''दादी, पर सोनू मर क्यों गया ?''

सवाल के जवाब देने ही होंगे- ''उसके दिल में गहरा दुःख था, पियूष।'' ''दादी, उसके दिल में दुःख क्यो था ?''

''उसे अपने मां-बाप से अलग जो कर दिया गया।''

''किसने किया, दादी ?''

“उस दुकानदार ने, जिससे हम उसे खरीदकर लाए थे। दुकानदार पशु-पक्षियों को बेचता हैं न! उसने कुछ लोगों से कह रखा है, वे जंगल में घात लगाकर घूमंे। मौका मिलते ही नन्हें पशु-पक्षियों को अपने जाल में फँसा लें।

उन्हें शहर लाकर उसे बेच दें। तुम्हीं बताओं, माँ-बाप से दूर होकर बच्चे दुःखी होते है कि नहीं ?”

“होते हैं, दादी। मम्मी, चार दिन के लिए मुझे छोड़कर नानू के पास मुंबई गई थीं तो मुझे भी बहुत दुःख हुआ था।”

तविषा और शैलेश के संग महरौली शैलेश के मित्र के बच्चे के जन्मदिन पर गया था पियूष! उन लोगों ने बंगले के पिछले हिस्से में

पशु-पक्षियों का छोटा-सा सुंदर बगीचा बना रखा था। मंझोले नीम के पेड़ की डाल पर तोते का पिंजरा लटका रखा था। जालीदार बड़े से बांकड़े में उन्होंने खरगोश पाल रखे थे। एक अन्य जालीदार बांकड़े में किस्म-किस्म की रंग-बिरंगी फुदकती चिड़ियां और नन्हें से पोखर में कछुए। पियूष को खरगोश और तोता इतने भाए कि घर आकर उसने जिद पकड़ ली-उसे भी घर में खरगोश और तोता चाहिए। तविषा और शैलेश ने बहुत समझाया-फ्लैट में पशु-पक्षी पालना कठिन है। कहाँ रखेंगे उन्हें ?

“बालकनी में।” पियूष ने जगह ढूंढ़ ली। तविषा ने उसकी बात काट उसे बहलाना चाहा-“पूरे दिन खरगोश बांकड़े में नही बंद रह सकते। उन्हें कुछ समय के लिए खुला छोड़ना होगा। छोटे-से घर में वे भागा-दौड़ी करेंगे। उनकी देखभाल कौन करेगा ?”

“दादी करेंगी।”

“दादी पढ़ाने कॉलेज जाएंगी तो उनके पीछे कौन करेगा ?”

“स्कूल से आकर मैं कर लूंगा।“

सारा घर हँस पड़ा।

सब लोग तब और चकित रह गए, जब पियूष ने दादी को पटाने की कोशिश की कि दादी उसके जन्मदिन पर कोई-न-कोई उपहार देती ही हैं। क्यों न इस बार वे उसे खरगोश और तोता लाकर दे दें। दादी हँसीं। जन्मदिन तो पियूष का आकर चला गया। अब जब आएगा, तब देखा जाएगा। लेकिन पियूष पर किसी के तर्क का कोई असर नहीं हुआ।

उसका हठ न टला तो न टला। निरूत्तर दादी उसे लेकर लाजपत नगर चिड़ियांे की

दुकान पर गईं। तोता और खरगोश में से उन्होंने पियूष को कोई एक चीज चुनने के लिए कहा। पियूष ने खरगोश का जोड़ा पसंद किया। तत्काल उनका नामकरण भी कर दिया-सोनू-मोनू! सोनू-मोनू के साथ उनका घर भी खरीदा गया-जालीदार बड़ा-सा बांकड़ा। उस सांझ सोसाइटी के उसके सारे हमजोली बड़ी देर तक बॉलकनी में डटे खरगोशों को देखते-सराहते रहे और पियूष के भाग्य से ईष्र्या करते रहें।

दूसरे रोज भी मोनू सामान्य नहीं हो पाया। पियूष को भी दादी ने प्ले स्कूल भेजना मुनासिब न समझा। पियूष घर में रहेगा तो दोनों एक-दूसरे को देख ढांढ़स महसूस करेंगे। उन्होंने स्वयं भी कॉलेज जाना स्थगित कर दिया। सुबह मोनू ने दूध के कटोरे को छुआ तक नहीं। बगल में रखे सोनू के खाली दूध के कटोरे को रह-रह कर सूँघता रहा। बांकड़े का दरवाजा खोलते ही वह बैठक में ठीक उसी स्थान पर आकर फर्श सूँघता हुआ मंडराने लगा, जिस स्थान पर उसने सोनू को निस्पंद पड़ा हुआ देखा था। उन्हंे मोनू की चिंता होने लगी। पियूष ने तो फिर भी दादी के मनाने पर कुछ खा-पी लिया।

तविषा अपराध-बोध से भरी हुई थी। मांडवी दी से उसने उपना संशय बांटा। चावल की टंकी में घुन हो रहे थे। उस सुबह उसने घुन मारने के लिए डाबर की पारे की गोलियों की शीशी खोली थी चावलों में डालने के लिए। शीशी का ढक्कन मरोड़कर जैसे ही उसने ढक्कन खोलना चाहा, कुछ गोलियाँ छिटककर दूर जा गिरी। गोलियाँ बटोर उसने टंकी में डाल दी थी। फिर भी उसे शक है कि एकाध गोली ओने-कोने में छूट गई होंगी और...

"दादी....."

"हाँ , पियूष !"

"दादी.....मोनू मेरे साथ खेलता क्यों नही ?"

"बेटा, सोनू जो उससे बिछुड़ गया है। वह दुःखी हैं। दोनों को एक-दूसरे के साथ रहने की आदत पड़ गई थी न!"

"मुझे भी तो सोनू के जाने का दुःख है..... दादी, "क्या हम दोनों भी मर जाएंगे ?"

मांडवी दी ने तड़पकर पियूष के मुँह पर हाथ रख दिया। डांटा-"ऐसे अपशकुनी बोल क्यो बोल रहा है ?"

पियूष ने प्रतिवाद किया, "आपने ही तो कहा था, दादी, सोनू दुःख से मर गया।"

"कहा था। उसे अपने माँ-बाप से बिछुडने का दुःख था। जंगल उसका घर है। जंगल में उसके माँ-बाप हैं। तुम तो अपने माँ-बाप के पास हो।"

"दादी, हम मोनू को उसके माँ-बाप से अलग रखेंगे तो वह भी मर जाएगा दुःख से ?"

मांडवी दी निरूत्तर हो आई।

‘‘दादी,हम मोनू को जंगल में ले जाकर छोड़ दें तो वह अपने मम्मी-पापा के पास पहुँच जाएगा। फिर तो वह मरेगा नहीं न ?’’

‘‘नहीं मरेगा.....पर तू मोनू के बिना रह लेगा न ?’’ मांडवी दी का कंठ भर आया।

‘‘रह लूंगा।’’

‘‘ठीक है। शैलेश से कहंूगी कि वह रात को गाड़ी निकाले और हमंे जंगल ले चले। रात में ही खरगोश दिखाई पड़ते हैं। शायद मोनू के माँ-बाप भी हमें दिखाई पड़ जाएंगे।‘‘

‘‘दादी...‘‘

‘‘बोल, पियूष!‘‘

‘‘दादी, मैंने आपसे कहा था न, मुझे तोता भी चाहिए ?’’

‘‘कहा था।’’

‘‘अब मुझे तोता नहीं चाहिए, दादी।’’

मांडवी दी ने पियूष को सीने से भींच लिया और दनादन उसका मुँह चूमने लगीं।

-चित्रा मुदगल

चित्रा मुदगल 10 दिसम्बर सन् 1944 ई0 को चेन्नई (तमिलनाडू) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित निहाली खेड़ा में और उच्च शिक्षा मुंबई विश्वविद्यालय मंे हुई। इनकी अब तक तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास, तीन बाल उपन्यास, चार बाल कथा संग्रह, पाँच सम्पादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। बहुचर्चित उपन्यास 'आवा' के लिए इन्हें 'व्यास सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है। ।

शब्दार्थ

बांकड़ा=जानवरों को रखने वाला पिंजरा। नागवार=जो अच्छा न लगे, अप्रिय। हमजोली =साथी, सहयोगी। रिस=क्रोध। मुनासिब=उचित, वाजिब। इंटरकाम=कार्यालयों में कमरों के बीच संचार व्यवस्था। ढांढ़स=आश्वासन, हिम्मत। निस्पंद=जो हिलता -डुलता नहीं। अपशकुन=बुरा शकुन, अशगुन। प्रतिवाद=विरोध, विवाद। बिटर-बिटर=टुकुर-टुकुर।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1.दिए गये शब्दों के बहुवचन लिखिए-

उपवन- बीमारी- पक्षी- पशु-
प्रश्न- सोफा- तोता- चिड़ियाँ-

2.दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर अनुस्वार (ं) लगाकर उन्हें दोबारा लिखिएं-

अबर-	आटी-
जगल-	नही-

पख- पिजरे-

3.दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए-

(i) प्रतिक्रिया - (ii) धमाचैकड़ी -

(iii) सफाचट - (iv) हमजोली -

विचार और कल्पना

1.पशु-पक्षियों को पालना सही है। यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों ? अपने विचार लिखिए।
2. यदि आपको पिंजरे में बन्द कर रखा जाय तो आपको कैसा लगेगा ? अपने विचार लिखिए।
3.जानवरों की बीमारियों को डॉक्टर (जानवरों के) कैसे ज्ञात करते हैं ? पता करके लिखिए।

कहानी से

1.तविषा घबराई हुई क्यों थी ? वह मांडवी दीदी से क्यों बात करना चाह रही थी ?
2.तविषा एवं शैलेश ने क्यों कहा-फ्लैट में पशु-पक्षी पालना कठिन है ?
3.मोनू ने दूध के कटोरे को क्यों नहीं छुआ ?
4.पियूष क्यों मोनू (खरगोश) को जंगल में वापस छोड़ने के लिए तैयार हो गया ?